

संपादक की कलम से

रोशन रिश्तों को करते हैं !

रखी (रक्षाबंधन) का पवित्र त्योहार है। वैसे तो राखी भाई बहन के असीम बंधन, अपनत्व, प्यार और असीम स्नेह का त्योहार है लेकिन आज राखी का यह त्योहार भाई बहन तक ही सीमित नहीं रह गया है। आज पर्यावरण की रक्षा के लिए पेड़-पौधों के राखी बांधी जाने लगी है, देश की रक्षा, हिंतों की रक्षा के लिए राखी बांधी जाने लगी है। विशेष रूप से हिंदूओं में प्रचलित यह त्योहार हमारे देश संरक्षित, हमारी परंपराओं का प्रतीक है और यह हमारे संपूर्ण देश ही नहीं बल्कि विदेशों में भी बहुत ही उत्साह, उल्लास, खुशी के साथ मनाया जाता है। पाठकों को यह विदित ही है कि राखी हर साल श्रावण पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। वास्तव में, रक्षा बंधन का यह पर्व परस्पर एक-दूसरे (भाई-बहन) की रक्षा, अपनत्व और सहयोग की भावना निहित है। वास्तव में रक्षाबंधन त्योहार की यदि हम सधी करें और इसके अर्थ को समझें तो इसमें रक्षा का अर्थ है सुरक्षा, और बंधन का अर्थ है बंधन। इसलिए, यह त्योहार भाइयों और बहनों के बीच सुखा, देखभाल और लंबे समय के बंधन का प्रतीक है रक्षाबंधन के दिन बहने भाइयों की दाहिनी कलाई पर बड़े ही प्यार से राखी बांधती हैं, उनका तिलक करती हैं, मुंह मीठा करवाती हैं और उनसे अपनी रक्षा का संकल्प लेती हैं। भाई भी बहनों को राखी पर उपहार स्वरूप पैसे, कपड़े, गहने आदि प्रदान करते हैं। यदि हम राखी के त्योहार को इतिहास की नजर से देखें तो वामानवतार नामक पौराणिक कथा में रक्षाबंधन का प्रसंग मिलता है। इस संबंध में विवरण मिलता है कि जब राजा बलि ने एक वज्ञ संपन्न कर स्वर्ग पर अधिकार का प्रयत्न किया, तो देवराज इंद्र ने भगवान विष्णु से प्रार्थना की। विष्णु जी वामन ब्राह्मण बनकर राजा बलि से भिक्षा मांगने पहुंच गए। गुरु के मना करने पर भी बलि ने तीन पग भूमि दान कर दी। वामन भगवान ने तीन पग में आकाश-पाताल और धर्मी नाप कर राजा बलि को रसातल में भेज दिया। उसने अपनी भक्ति के बल पर विष्णु जी से हर समय अपने सामने रहने का वचन ले लिया। लक्ष्मी जी इससे चौंतित हो गई। नारद जी की सलाह पर लक्ष्मी जी बलि के पास गई और रक्षासूत्र बांधकर उसे अपना भाई बना लिया। बदले में वे विष्णु जी को अपने साथ ले आई। कहते हैं कि उस दिन श्रावण मास की पूर्णिमा तिथि थी। हमारे इतिहास से हमें यह भी जानकारी मिलती है कि मेवाड़ की महारानी कर्मवती ने मुगल राजा हुमायूँ को राखी भेजी थी। सच तो यह है कि उस दैरान गुजरात के सुल्तान बहादुर शाह से अपनी और अपनी प्रजा की सुरक्षा का कोई रस्ता न निकलता देख रानी ने हुमायूँ को राखी भेजी थी। हुमायूँ ने एक मुसलमान शासक होते हुए भी राखी की लाज रखी। यह भी कहते हैं, सिंकंदर की पत्नी ने अपने पति के हिंदू शत्रु पुरुष को राखी बांधकर उसे अपना भाई बनाया था और युद्ध के समय सिंकंदर को न मारने का वचन लिया था। पुरु ने युद्ध के दैरान हाथ में बंधी राखी का और अपनी बहन को दिए हुए वचन का सम्मान करते हुए सिंकंदर को जीवनदान दिया था। एक अन्य कथा के अनुसार गिनौरेगढ़ के राजा निजाम शाह गोंड के रिश्वेदार आलमशाह ने एक साजिश के तहत राजा को जहर देकर मार दिया था। तब रानी ने इसका बदला लेने और सियासत को बचाने के लिए मोहम्मद खान को राखी भेजकर मदद की गुजारिश की थी। उस समय मोहम्मद खान ने भाई का फर्ज निभाते हुए रानी की मदद की थी। एक अन्य पौराणिक कथा के मुताबिक यमुना ने एक बार भगवान यम की कलाई पर धागा बांधा था। वह मन ही मन में यम को अपना भाई मानती थी। भगवान यम यमुना से इतने ज्यादा खुश हुए कि यमुना की रक्षा के साथ-साथ अमर होने का भी वरदान दे दिया। कहते हैं कि साथ ही उन्होंने यह वचन भी दिया था कि जो भाई अपनी बहन की मदद करेगा, उसे लंबी आयु का वरदान देंगे। एक अन्य कथा भगवान गणेश जी की भी मिलती है, गणेश जी के पूत्र शुभ और लाभ एक बहन चाहते थे, तब भगवान गणेश जी ने एक वज्ञ करके मां संतोषी को प्रकट किया था। वैसे राखी का विवरण पुराणों में भी मिलता है।

अरविंद जयतिलक

मगलवार का भारत के प्रतास्त नागरक समन पद्मभूषण से सम्मानित मेजर ध्यानचंद जी का जन्मदिन मनाया गया। खेल में उनके महत्वपूर्ण योगदान के सम्मान में उनके जन्मदिन को भारत में खेल दिवस के रूप में मनाया जाता है। मेजर ध्यानचंद विश्व हॉकी में शुमार महानतम खिलाड़ियों में से एक अद्वित खिलाड़ी रहे हैं जिन्होने अपनी प्रतिभा व लगन से देश का मस्तक गौराचित किया। अच्छी बात है कि देश के खिलाड़ी उनसे प्रेरणा लेकर अपने खेल का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर रहे हैं। अभी कल ही नीरज चोपड़ा ने दमदार प्रदर्शन करते हुए भारत को विश्व ऐथ्लेटिक्स चैंपियनशिप में गोल्ड मेडल दिलया। इससे पहले संपन्न कॉमनवेल्थ गेम्स में भारत अपने खिलाड़ियों के श्रेष्ठ प्रदर्शन से गौराचित हो चुका है। तब भारत ने कॉमनवेल्थ गेम्स 2022 में पदकों की झड़ी लागते हुए कुल 61 मेडल हासिल किए थे जिसमें 22 गोल्ड, 16 सिल्वर और 23 ब्रॉन्ज मेडल शामिल रहे। इस शानदार प्रदर्शन से भारत ने चैथा स्थान हासिल किया जिससे देश का मस्तक स्वाभिमान से दमक उठा। कॉमनवेल्थ गेम्स की तरह गत वर्ष संपन्न टोक्यो ओलंपिक में भी भारतीय खिलाड़ियों ने अपने खेल का शानदार प्रदर्शन किया। भारत के खाते में एक गोल्ड, दो सिल्वर और चार ब्रॉन्ज समेत कुल सात पदक आए। नीरज चोपड़ा, मीराबाई चानू, रवि दहिया, पीवी सिधु, लवनीना बोरगेहन, वजरंग पुनिया और भारतीय पुरुष हॉकी टीम के खिलाड़ियों ने अपना जलवा बिखेरा। कॉमनवेल्थ और टोक्यो ओलंपिक की उपलब्धियों से देश रोमांचित है। पूरे देश में खिलाड़ियों का इस्तकबाल हो रहा है और नवोदित खिलाड़ियों का दैमला बल्ट

मस्तक स्पानिन मानन स दमक उठा। कॉम्पनवेल्थ गेम्स की तरह गत वर्ष संपन्न टोक्यो ओलंपिक में भी भारतीय खिलाड़ियों ने अपने खेल का शानदार प्रदर्शन किया। भारत के खाते में एक गोल्ड, दो सिल्वर और चार ब्रॉन्ज समेत कुल सात पदक आए। नीरज चोपड़ा, मीराबाई चानू, रवि दहिया, पीवी सिंधु, लवनीना बोरगेहेन, बजरंग पुनिया और भारतीय पुरुष हॉकी टीम के खिलाड़ियों ने अपना जलवा बिखेरा। कॉम्पनवेल्थ और टोक्यो ओलंपिक की उपलब्धियों से देश रोमांचित है। पूरे देश में खिलाड़ियों का इस्तकबाल हो रहा है और नवोदित खिलाड़ियों का हौसला बुलंद है। उम्मीद किया जाना चाहिए कि अब अगले कॉम्पनवेल्थ गेम्स और ओलंपिक में भारत एक नया कीर्तिमान रचेगा। यह समझना होगा कि किसी भी राष्ट्र की प्रतिभा खेलों में उसकी उल्कृष्टता और हासिल होने वाले पदकों से जुड़ा होता है। अच्छा प्रदर्शन केवल पदक जीतने तक ही सीमित नहीं होता बल्कि राष्ट्र के स्वास्थ्य, मानसिक अवस्था एवं लक्ष्य के प्रति सतर्कता व जागरूकता को भी रेखांकित करता है। दो राय नहीं कि कॉम्पनवेल्थ और टोक्यो ओलंपिक में मिली उपलब्धियों ने देश को गौरान्वित किया है। लेकिन एक सच यह भी है कि 135 करोड़ की आबादी वाले देश को इससे बड़ी उपलब्धि की दरकार है। ऐसा तभी संभव होगा जब देश में उल्कृष्ट खिलाड़ियों, अकादमियों और प्रशिक्षकों को बढ़ावा मिलेगा। एक आंकड़े के मुताबिक देश में सिर्फ पंद्रह प्रतिशत लोग ही खेलों में अभियन्वित रखते हैं। यह आंकड़ा निराश करने वाला है। विचार करें तो इसके लिए भारतीय समाज का नजरिया और सरकार की नीतियां दोनों जिम्मेदार हैं। समाज में यह धारणा है कि खेलकूद के जरिए नौकरी या रोजी-रोजगार हासिल नहीं किया जा सकता। इसलिए पढ़ाई पर ज्यादा जोर दिया जाना चाहिए। नतीजा सामने है। बच्चों में खेल के प्रति लगन और उत्सुकता में कमी है। चिंता की बात यह भी कि सरकारें भी खेल के विकास का इंफ्रास्ट्रक्चर मजबूत करने के बजाए राष्ट्रीय खेल अकादमियों का अध्यक्ष व सदस्य कौन होगा उस पर ज्यादा फोकस करती हैं। भला ऐसे माहौल में खेल का विकास कैसे होगा। खेलों के विकास के लिए आवश्यक है कि सरकार की खेलनीति स्पष्ट व इमानदार हो। स्कूलों, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों व खेल अकादमियों में बुनियादी ढांचे के विकास की गति तेज हो। बेहतर होगा कि सरकारें स्कूल स्तर से ही खेल को बढ़ावा देने का मिशन चलाए। स्कूलों में बच्चों की प्रतिभा



A portrait of a young Indian badminton player, Parupalli Kashyap, smiling. He is wearing a white headband and a blue shirt with 'Reliance Foundation' and 'ATDK' logos. A gold medal hangs around his neck. The background is a blurred stadium with bright lights.

एवं विभिन्न खेलों में उनकी अभिरुचि को ध्यान में रखकर उन्हें विभिन्न किस्म के खेलों में समायोजित कर उनके उचित प्रशिक्षण की व्यवस्था करे। ऐसा करने से उनकी प्रतिभा का सारथक इस्तेमाल होगा और खेल को बढ़ावा मिलेगा। लेकिन देखें तो स्कूलों में खेल के प्रति धौर उदासीनता है।

इसका मूल कारण खेल संबंधी संसाधनों की भारी कमी और खेल से जुड़े योग्य शिक्षकों-प्रशिक्षकों का अभाव है। अगर प्राथमिक स्कूलों से इतर माध्यमिक विद्यालयों, कालेजों और विश्वविद्यालयों की बात करें तो यहां भी रिश्ति कमोवेश वैसी ही है। यहां संसाधन तो हैं लेकिन इच्छाकृति और प्रशिक्षण के अभाव में खेलों के प्रति रुझान नहीं बढ़ रहा है। उचित होगा कि केंद्र व राज्य सरकारें खेलों में सुधार के लिए पटियाला में स्थापित खेल संस्थान की तरह देश के अन्य हिस्सों में भी इस तरह के संस्थान खोलें। ऐसा इसलिए कि उचित प्रशिक्षण के जरए ही देश में खेलों का स्तर ऊँचा उठाया जा सकता है। यहां यह भी समझना होगा कि जब तक खेलों को रोजगार से नहीं जोड़ा जाएगा तब तक खेल प्रतिभागियों में स्पर्धा का वातावरण निर्मित नहीं होगा। अगर खेलों में नौजवानों को अपना भविष्य सुनिश्चित नजर नहीं आएगा तो स्वाभाविक है कि वे वे खेलों में बढ़-चढ़कर हिस्सा नहीं लेंगे। खेलों में भविष्य सुरक्षित न होने के कारण ही नौजवानों में उदासीनता है और खेल के क्षेत्र में भारत फिसड़ी देशों में शामिल है। यहां यह भी ध्यान रखना होगा कि खेलों में खराब स्थिति के लिए एकमात्र सरकार की उदासीनता ही जिम्मेदार नहीं है। बल्कि खेल से विमुखता के लिए काफी हृद तक समाज का नजरिया भी जिम्मेदार है। आज भी देश में एक कहावत खूब प्रचलित है कि ह्यापदोगे-लिखोगे बनोगे नवाब, खेलोगे-कूदोगे होंगे खराबह। अब इस कहावत को बदलने की जरूरत है। अकसर देखा जाता है कि माता-पिता के माथे पर तब चिंता की लकड़ीं उभर आती हैं जब उनका बच्चा खेल में कुछ ज्यादा ही अभिरुचि दिखाने लगता है। तब उन्हें डर सताने लगता है कि कहीं उनका बच्चा खेल में अपनी उर्जा खर्च कर अपना भविष्य न चैपट कर ले। स्कूलों में भी युग्मजनों द्वारा अकसर बच्चों से कहते सुना जाता है कि दिन भर खेलोगे तो पढ़ोगे कब। इस तरह की प्रवृत्ति ठीक नहीं है। बच्चों को खेलने के लिए उत्साहित करना चाहिए। अगर सरकार की नीतियों में खेल से रोजगार का जुड़ाव हो तो फिर प्रदर्शन कर तुनवा के जाचा मत कर रहा है। उसके ओलंपिक पदकधारकों में महिलाओं की तादाद भी अच्छी रहती है। अच्छी बात है कि अब भारत में भी खेलों को लेकर उत्साह बढ़ा है। महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही है। उचित होगा कि भारत भी चीन की तरह खेल को अपनी शीर्ष प्राथमिकता में शामिल कर अपनी नीतियों को उसी अनुरूप ढाले। इससे अपेक्षित परिणाम मिलना तय है। इसके लिए भारत को गांवों से लेकर नगरों तक के खेल की बुनियादी ढांचे में आमुल-चूल परिवर्तन करना होगा। उसे खेल प्रशिक्षण की आधुनिक अकादमियों की स्थापना के साथ-साथ समुचित प्रशिक्षण, खेल धनराशि में वृद्धि तथा प्रतियोगिताओं का आयोजन करना होगा। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों एवं प्रशिक्षकों को सम्मानित करना होगा। यहीं नहीं मेजर ध्यानवंद जैसे अन्य महान खिलाड़ी को भारत रत्न की उपाधि से विभूषित करना होगा। अच्छी बात है कि भारत सरकार ने उनके नाम से खेल पुरस्कार को जोड़ दिया है। उचित होगा कि केंद्र व राज्य सरकारें खेल के विकास के लिए ईमानदार और स्पष्ट नीति को लागू करे। उसका क्रियान्वयन और अनुपालन कराएं। इस पहल से भारत पदक तालिकाओं में शीर्ष पर दिखेगा।

'इंडिया' में बसपा को साथ लेने की जुगत

डिया (इंडियन नेशनल डेवलेपमेंट्स)

एलायस) नाम से बन नए विपक्षी गठबंधन का तीसरी बैठक 31 अगस्त-1 सितंबर के बीच मुंबई में होगी। इस मीटिंग की मेजबानी शिवसेना (उद्धव गुट) और एनसीपी (शरद गुट) मिलकर कर सकते हैं। नया गठबंधन बनने के बाद यह पहली मौका है, जब सभी 26 विपक्षी दल किसी ऐसे राज्य में मीटिंग करेंगे जहाँ उनका कोई सदस्य सता में नहीं है। दरअसल महाराष्ट्र में बीजेपी-शिवसेना (शिव गुट)-एनसीपी (अजित गुट) की सरकार है। इनमें से कोई भी इंडिया का हिस्सा नहीं है। पहली मीटिंग विहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की जद्यू द्वारा 23 जन को पटना में आयोजित की गई थी। दूसरी बैठक बैंगलुरु में 18-19 जुलाई को आयोजित की गई थी और इसकी मेजबानी कांग्रेस ने की थी। कांग्रेस के लिए 2024 के चुनाव के लिए उत्तरादेश महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि वह जानती है कि दिल्ली का रास्ता यही से जाता है। विपक्ष जानता है कि यदि उत्तरादेश में सपा, कांग्रेस और मायावती के बीच वोटों का बटवारा हुआ तो किसी को कुछ नहीं मिलेगा। 2014 में भाजपा ने 80 में से 71 सीटें जीती थीं, भाजपा की सहयोगी अपना दल ने भी दो सीटें जीती थीं। कांग्रेस से सिर्फ सोनिया और राहुल ही जीते बाकी पांच सीटें समाजवादी पार्टी ने जीतीं। 19.5 फीसदी मुस्लिम आबादी वाले

लेकिन 2019 में जब एसपी-बीएसपी का गठबंधन हुआ तो भाजपा 71 से पिछकर 62 पर आ गई। एसपी को सिर्फ पांच सीटें मिलीं, लेकिन बीएसपी जीत गई कांग्रेस से दस लौकसभा सीटें। केवल सोनिया गांधी जीतीं और उनकी पार्टी ने फिर से दो सीटें जीतीं। हालांकि, अखिलेश यादव और आजम खान के लोकसभा सीटों से इसीफे के बाद हुए उपचुनाव में ये दोनों सीटें भी भाजपा ने जीत लीं। 2019 का नतीजा इस लिहाज से और भी महत्वपूर्ण हो जाता है कि एसपी-बीएसपी गठबंधन के कारण मुस्लिम वोटों का बंटवारा नहीं हुआ और दोनों पार्टीयों के तीन-तीन मुस्लिम उम्मीदवार जीते। अब अगर बसपा कांग्रेस, सपा और रालोद के साथ नहीं आती है तो भारत गठबंधन का कोई मतलब नहीं रह जाएगा। विकोणीय चुनाव से मुस्लिम वोट बंट जाएगा और भाजपा की सीटें बढ़ जाएंगी, क्योंकि 2014 में एनडीए ने 80 में से 73 सीटें जीती थीं। मायावती इस बात से भी वाकिफ हैं कि कर्नाटक का सदैश मुस्लिम वोटों को कांग्रेस की ओर लौटाना है, इसलिए कांग्रेस-सपा गठबंधन में शामिल होना उनके लिए फायदेमंद होगा। अने बाले दिनों में सिर्फ उत्तर प्रदेश ही भारत संघ का हिस्सा बन सकता है, लेकिन बाकी राज्य अलग रहेंगे। गैरतलब है कि इस बार कांग्रेस ने हिमाचल और कर्नाटक में भाजपा से जीत हासिल की है और

चुनावी सर्वे में इन तीनों राज्यों में से किसी में भी भाजपा का दबदबा नहीं दिख रहा है। राजस्थान और मध्य प्रदेश में कड़ी टक्कर बताई जा रही है और छत्तीसगढ़ में कांग्रेस का दबदबा है। मान लीजिए कि अगर इन तीन राज्यों में भी कांग्रेस जीतती है, तो 2019 की तुलना में कांग्रेस की स्थिति काफी बेहतर होगी। कांग्रेस कार्यकर्ताओं का मनोबल ऊचा है। हालांकि, लोकसभा चुनाव की पूरी जिम्मेदारी क्षेत्रीय पार्टियों पर है। अगर भाजपा 100 नहीं तो 50-55 सीटें हार जाती है, तो उसे सरकार बनाने के लिए सहयोगियों पर निर्भर रहना होगा। अगर भाजपा 50 सीटें हारने के बावजूद 250 सीटें जीतती है, तो वह सरकार बनाएगी, क्योंकि उसके सहयोगी निश्चित रूप से 30-35 सीटें जीतेंगे और एनडीए को बीजेडी, वाईएसआर कांग्रेस का भी समर्थन मिलेगा। यदि कांग्रेस की सीटें दोगुनी भी हो जाएं तो भी भारत में गठबंधन सरकार नहीं बन सकती। लेकिन कांग्रेस का लक्ष्य क्षेत्रीय दलों के कंधों पर सवार होकर अपनी ताकत बनाना है, ताकि उसे तीसरी बार करारी हार न झेलनी पड़े और विपक्ष के नेता का दर्जा भी न मिले। लोकसभा। 2024 का लोकसभा चुनाव सिर्फ कांग्रेस ही नहीं, बल्कि गांधी परिवार के लिए भी जीने-मरने का सवाल बन गया है। सोनिया गांधी अपनी उम्र और बीमारी के कारण चुनावी राजनीति से दूर रहना चाहती हैं।

हाते क्योंकि वे राहुल गांधी और प्रियंका पर उस सेनाओं को सोनिया गांधी पर इतना भरोसा नहीं कर सकते जैसे 1998 में उन्होंने सीताराम केसरी को हटाकर सोनिया को अध्यक्ष बना दिया। इसीलए सोनिया गांधी पर दबाव है कि उन्हें लोकसभा चुनाव लड़ना चाहिए। लेकिन अगर वह चुनाव लड़ने को तैयार नहीं हैं तो यह यावरेली में कौन चुनाव लड़ेगा इस पर मंथन चल रहा है। क्या प्रियंका गांधी को वहाँ चुनाव लड़ने के लिए भेजा जाएगा अगर प्रियंका यावरेली से चुनाव लड़ेगी तो अमेठी से कौन लड़ेगा सृति झारीनी से हारेने के बाद राहुल गांधी दोबारा अमेठी से चुनाव नहीं लड़ना चाहते हैं। ऐसे में जब प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय ने ऐलान किया कि राहुल गांधी अमेठी से चुनाव लड़ेगी तो अगले ही दिन उन्हें अपना बयान वापस लेना पड़ा। उन्होंने बयान बदलते हुए कहा कि अमेठी के कार्यकर्ता चाहते हैं कि राहुल गांधी वहाँ से चुनाव लड़ें। अजय राय के बयान वापस लेने से यह साफ हो गया है कि उन्हें गांधी परिवार के फिरी भी सदस्य के बारे में बोलने से रोका गया है। परिवार में इस बात पर मंथन चल रहा है कि राहुल गांधी को वायानाड के साथ-साथ अमेठी की बजाय यावरेली से भी चुनाव लड़ना चाहिए।

भाई-बाहन के स्नह का प्रताक ह रक्षाबधन का पव

卷之三

बन्धन का पव भाइ-बाहन का प्रतीक देश का एक प्रमुख गंगा है। रक्षाबन्धन पर्व में रक्षासूत्र राखी का सबसे अधिक महत्व इस पर्व के दिन बहनें अपने भाई राखी बांधती हैं। श्रावण मास की मात्रा के दिन मनाये जाने के कारण श्रावणी पर्व भी कहते हैं। इस ब्राह्मण, गुरु द्वारा भी राखी बांधी जाती है। हिन्दू धर्म के सभी धार्मिक आनंदों में रक्षासूत्र बांधते समय इस दृष्टि संस्कृत में एक श्लोक का वराण करते हैं। जिसमें रक्षाबन्धन सम्बन्ध राजा बलि से स्पष्ट रूप दृष्टिगोचर होता है। यह श्लोक बन्धन का अभीष्ट मन्त्र है।

बद्धो बलि राजा दानवेन्द्रो बलः

**त्वाम प्रतिबद्धनामी रक्षे
ल माचलः**

श्लोक का अर्थ है जिस रक्षासूत्र द्वारा न शक्तिशाली दानवेन्द्र राजा बलि को बांधा गया था, उसी सूत्र से ज्ञे बांधता हूं। तुम अपने सकल्प कभी भी विचलित मत होना। बन्धन का त्योहार कब शुरू हुआ कोई नहीं जानता। लेकिन दानव में युद्ध शुरू हुआ। तब देवताओं पर दानव हावी होने लगे। देवराज इन्द्र ने घबरा कर देवताओं के गुरु बृहस्पति से मदद की गुहार की। वहाँ बैठी इन्द्र की पत्नी इन्द्राणी सब सुन रही थी। उन्होंने रेशम का धागा मन्त्रों की शक्ति से पवित्र करके अपने पति के हाथ पर बांध दिया। संयोग से वह श्रावण पूर्णिमा का दिन था। लोगों का विश्वास है कि इन्द्र इस लड्डाई में इसी धागे की मन्त्र शक्ति से ही विजयी हुए थे। उसी दिन से श्रावण पूर्णिमा के दिन यह धागा बांधने की प्रथा चली आ रही है। यह धागा धन, शक्ति, हर्ष और विजय देने में पूरी तरह समर्थ माना जाता है। स्कन्ध पुराण, पद्मपुराण और श्रीमद्भागवत में वामनावतार नामक कथा में रक्षाबन्धन का प्रसंग मिलता है। दानवेन्द्र राजा बलि ने जब 100 यज्ञ पूर्ण कर स्वर्ग का राज्य छीनने का प्रयत्न किया तो इन्द्र आदि देवताओं ने भगवान विष्णु से प्रार्थना की। तब भगवान विष्णु वामन अवतार लेकर ब्राह्मण का वेष धारण कर राजा बलि से भिक्षा मांगने पहुंचे। गुरु के मना करने पर भी राजा बलि और धरता नापकर राजा बलि का पाताल लोक में भेज दिया। कहते हैं कि पाताल लोक में राजा बलि ने भक्ति के बल पर भगवान विष्णु से रात-दिन अपने सामने रहने का वचन ले लिया। भगवान के घर न लौटने से परेशान लक्ष्मी जी को नारद जी ने एक उपाय बताया। उस उपाय का पालन करते हुए लक्ष्मी जी ने राजा बलि के पास जाकर उसे रक्षाबन्धन बाधकर अपना भाई बनाया और अपने पति भगवान विष्णु को अपने साथ ले आयीं। उस दिन श्रावण मास की पूर्णिमा तिथि थी। महाभारत में भी इस बात का उल्लेख है कि जब युधिष्ठिर ने भगवान कृष्ण से पूछा कि मैं सभी संकटों को कैसे पार कर सकता हूं। तब भगवान कृष्ण ने उनकी तथा उनकी सेना की रक्षा के लिये राखी का त्योहार मनाने की सलाह दी थी। उनका कहना था कि राखी के इस रेशमी धागे में वह शक्ति है जिससे आप हर विपत्ति से मुक्ति पा सकते हैं। इस समय द्वौपदी द्वारा कृष्ण को तथा कुन्ती द्वारा अभिमन्यु को राखी बांधने के कई उल्लेख मिलते हैं।

پاکستان-چندپان-ہندوستان! تککا د آئدھا اے ویشناؤ نے !!

400

इस्ताना याकिस्तान दावा न घंटवान पर गत दिनों कई इंटरव्यू प्रसारित किये। इनमें आमजन के संग आलिम और फाजिल (ज़ानी) भी शामिल रहे। कुछ ने भारत से सबूत मांगा कि चांद पर तिरंगा कैसे लहराया इन लोगों का क्यास था कि अमेरिकी NASA के पुराने चित्र को इसरो ने चला दिया। अतः दावा बोगस है। अतरिक्ष कार्यक्रम में कफ़फ़ एक और आयाम भारत जोड़ने वाला है। अगले शनिवार (2 सितंबर 2023) की सुबह सूरज की ओर छ-1 रविवार रवाना होगा। जब चंद्रयान के उत्तरने के स्थल को नंदें मोदी ने शिवशक्ति केंद्र नाम दिया, चंद्र हिंदुस्तानियों ने भी ऐतराज किया। अर्थात् सेक्युलर भारत ने भगवान भोलेनाथ को विज्ञान में क्यों डाल दिया कुछ राहुल गांधी-टाइप संदिग्धता थी। तब पुलवामा जम्मूपार (14 फ़रवरी 2019) में केंटीया भूमि दिया था। उस तरफ कारप्रसा उस लाकसभा का चुनावी स्टंप बता रहे थे। वे झूठे साबित हुये। विश्वानाथ की नगरी प्रधानमंत्री का चुनाव क्षेत्र भी है। क्या इसलिए इस पर ISRO के अधक्ष प्रीधर पणिकर सोमनाथ ने सटीक जवाब दिया : चंद्रयान-3 की लैंडिंग साइट का नाम शिव-शक्ति रखने का देश को अधिकार है। कई दूसरे देशों ने चंद्रमा पर अपना नाम खाला है। यह हमेशा उस देश का विशेष अधिकार रहा है। एक परंपरा रही है। पाकिस्तानी एंकर ने बताया : पवित्र कुरान में लिखा है : और उसने सूर्य और चंद्रमा को तुम्हरे अधीन कर दिया, जो लगातार चलते रहते हैं। [सूरह 14, आयत 33]। पृथ्वी की स्थिर प्रकृति पर पवित्र कुरान कहता है : निस्सैहेह, अल्लाह आकाश और पृथ्वी को संभाले रखता है, ऐसा न हो कि वे भटक जाएँ। [सूरह 35, आयत 41]। मिल्ली-

A collage of four images. From left to right: 1) A group of men, one in a white robe, performing a ritual with a golden lamp. 2) The word "DAWN" in large serif letters, with a small portrait of a man in a suit above the letter "A". 3) The "PTV world" logo, featuring the words "PTV" in yellow and "world" in blue inside a white box. 4) A portrait painting of a man with a very long, full white beard and mustache, wearing a dark robe.

कि पृथ्वी सूर्य का च ने यह बात सर्वप्रथम विज्ञान से जुड़े सत्य की खोज करने वाले उत्पाइन ज्ञानेन पर गतिमान हैल के कान बाइबल में जो बात अंतिम और अटल र में इस्लामी आस्था हे प्रकरण देखें। मशहूद दारुल उलूम के पूर्व गुलाम मोहम्मद वस्त पद से हटा दिया ग उन्होंने एक शैक्षिक छात्रों को गणेश की उन पर मूर्तिपूजा (2011) मढ़ा गया । गणतंत्र के सेक्युरिटी बातों के बीच देवताओंकाली ने गान्धी

कर दिया था, क्या
था अहमद तब वे
और नाविक मंत्री
कारण वहां की
पाकिस्तानी मीडि
टीव्र भर्त्सन भी थी
पाकिस्तानी महिला
दौरान कहा : ४
चुका है, वहीं हाँ
हुए हैं। अगर
करना है तो इसे
जिसमें भारत आ
न्यूज शो में पुरस्क
अंदाजा लगा सकता
पहुंच गया है और
बच्चों को चांद-
चंद्रयान मिशन
पाकिस्तान के पृ
ट्वीट से हुई ६
सप्तक्रम में सज्जन

पाकिस्तान में लाइव दिखाने की बात कही। उन्होंने इसे मानव जाति के लिए ऐतिहासिक पल भी बताया। लेकिन साल 2019 में जब भारत ने चंद्रयान-2 मिशन चांद पर भेजा था, तब चौधरी ने इसका मजाक बनाया था।

तब उन्होंने कहा था : भारत को चंद्रयान जैसे फालतू मिशन पर पैसे बर्बाद करने की बजाय अपनी गरीबी पर ध्यान देना चाहिए। पाकिस्तान की न्यूज वेबसाइट फ्राइडे टाइम्स ने चंद्रयान-3 की कामयाबी से पहले विज्ञान के प्रोफेसर डॉ सलमान हामीद का एक लेख आया है। इसमें उन्होंने लिखा : 1960 के दशक में पाकिस्तान का अपना अंतरिक्ष कार्यक्रम था। लेकिन चीजे खराब होती गईं। भारत कहाँ से कहाँ चला गया सलमान ने लिखा है : "मुझे याद है कि 2019 में भारत का चंद्रयान-2 नाकाम रहा था तो पाकिस्तान के तत्कालीन विज्ञान मंत्री ज़ोधी ने मन्त्रालय दूरवाया था।"

